ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

'स्वाधीनता के गीत' : समय की दस्तक

डॉ. भाऊसाहेब एन. नवले

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

लोकनेते डॉ. बालासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित)

प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल

तहसील-राहुरी, जिला-अहमदनगर

शोध सार :

'स्वाधीनता के गीत' संग्रह के गीत अपने समय की दस्तक ही नहीं अपितु कलम के माध्यम से बनी आजादी की बुनियाद कहे जा सकते हैं। कहना गलत न होगा कि स्वाधीनता के आंदोलन में कलम की धार ने अपना परिचय एवं प्रदिबद्धता से आम जन को अवगत किया है। हिंदी कवियों ने कलम अर्थात अहिंसात्मक माध्यम से आजादी के आन्दोलन को मजबूत बनाकर जन-जीवन में राष्ट्रीयता की भावना एवं चेतना को व्यापक स्तर पर बढ़ावा दिया। हिंदी कवि मात्र कलमकारी आंदोलक नहीं थे बल्कि वे स्वयं भी आंदोलनों में सक्रीय होते थे। यही कारण है कि इन कवियों के गीत जानदार बने हुए दृष्टिगोचर होते हैं। विदेशी शासकों के बहुआयामी शोषण के का प्रतिरोध इन कवियों किया है। साथ ही कवि समाज को जीवन के प्रति आस्थावान बनाने की दृष्टि से प्रयासरत दिखाई देते हैं। जिससे वे जीवन की सार्थकता को समझकर वीरों के प्रति आदरभाव प्रकट कर सकें और स्वयं भी उन्हें आदर्श मानकर अपनी सक्रियता का परिचय दे सकें।

बीज शब्द : *स्वाधीनता, विदेशी हुकमत, स्वाधीनता आन्दोलन का उद्वेलन, फूट डालो और राज करो की नीति, कवियों की सक्रियता, झंडा, सीना, राष्ट्रीय भावना, भाईचारा, जीवन के प्रति आस्था, जीवन की सार्थकता, खिल्ली उड़ाना, नारी चेतना आदि।*

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रास्ताविक : स्वाधीनता आंदोलन भारतवर्ष के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। क्योंकि यह एक ऐतिहासिक सच्चाई एवं घटना है। जिसने आमजन को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया है। भारतवर्ष के स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास दुनिया में अपनी विशिष्ट छवि के साथ मुखरित हुआ है। हिंदुस्तान के स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी किसी विशिष्ट समुदाय की कहानी नहीं है, जबकि वह पूरे हिंदुस्तान के दिलो-दिमाग की कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन की नींव में अहिंसा तत्त्व को पर्याप्त मात्रा में केंद्र में रखा गया, क्योंकि स्वाधीनता आंदोलन की लड़ाई में जहां तलवार अपनी जगह पर काम कर रही थी वहां दूसरी ओर भारतवर्ष की अन्य भाषाओं के रचनाकार भी अपनी कलाम के माध्यम से आम जन में चेतना जगाने में अपना दायित्व निभा रहे थे। स्वाधीनता आंदोलन में क्रांतिकारियों के इतिहास को नकारा नहीं जा

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

सकता। उनका योगदान महनीय एवं राष्ट्रीय विरासत के रूप में रहा है। दूसरी ओर हिंदी के कवियों का योगदान भी किसी क्रांतिकारी के योगदान से कम नहीं रहा है, इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में हिंदी भाषा एवं साहित्य का योगदान एवं अन्यसाधारण महत्व रहा है। किसी भी भाषा एवं साहित्य के रचनाकार क्यों न हों, वे अपने समसामयिक प्रभाव एवं परिवेश से अलक्षित नहीं रह सकते। क्योंकि स्वाधीनता आंदोलन का उद्वेलन रचनाकारों की व्यापक एवं गहरी संवेदना को भी उद्घाटित करता है जो रचनाकारों की बेचैनी को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोधालेख में 'स्वाधीनता के गीत' को केंद्र में रखकर समय की दस्तक बने गीतों की संवेदना को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

स्वाधीनता आंदोलन एवं हिंदी : पृष्ठभूमि

भारतवर्ष की समस्त भाषाओं में भी स्वतंत्रता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में रचनाकारों की संवेदनात्मक प्रतिबद्धता दिखाई देती है। हिंदी साहित्य एवं साहित्यकारों की स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति निहित प्रतिबद्धता अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है। जिनमें देश के प्रति असीम आस्था, अतीत का गौरव गान सामाजिक, नारी चेतना, जीवन की सार्थकता, राष्ट्रीयता की भावना एवं युवाओं की चेतना आदि पहलू उद्घाटित हुए हैं। स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय कवि मात्र कलम को ही लेकर नहीं चलते थे जबकि वे स्वयं भी महात्मा गांधी जी के आंदोलन में झंडा हाथ में लेकर सक्रिय होते थे। हम इस बात से परिचित है कि भारतेंदु, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा माखनलाल चतुर्वेदी आदि हिंदी के दिग्गजों ने राष्ट्रीय चेतना को व्यापक परिप्रेक्ष्य में उजागर कर स्वाधीनता आंदोलन के प्रति अपनी गहरी आस्था एवं आमजन के प्रति निहित संवेदना को केवल सहानुभूति नहीं बल्कि स्व-अनुभूति के आधार पर दायित्व निभाया है।

स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हिंदी कवियों के बारे में कहना सही होगा कि "देश के उत्कर्षाकर्ष के लिए उत्तरदायी पारिस्थितियों पर प्रकाश डालकर भारतेंदु युगीन कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीय भाव का बीजारोपण किया।"[1] दृष्टव्य कथन इस बात का परिचायक है कि हिंदी कवियों ने समसामयिक परिस्थितियों को केंद्र में रखकर आम जन में राष्ट्रीय भाव का बीजारोपण कर राष्ट्र की नींव बनाने में महनीय योगदान दिया है।

स्वाधीनता के गीत : राजस्थान राज्य अभिलेखागार द्वारा 1987 में प्रकाशित 'स्वाधीनता के गीत' जे.के जैन द्वारा संपादित काव्य-गीतों का संकलन है, राष्ट्रीय भावना के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित हिंदी के साथ-साथ राजस्थानी, गुजराती और उर्दू के कुल 100 गीत संकलित है। देश के आजाद होने के बाद अर्थात लगभग 40 वर्षों के बाद इस ग्रंथ का प्रकाशन होना और विविध रचनाकारों की संवेदना को व्यापक पटल पर लाना महत्वपूर्ण प्रयास कहा जा सकता है। इस ग्रंथ के आरंभ में निदेशक जे के जैन प्रस्तावना में कहा है-

'सुनाये तुम्हें कि हम क्या चाहते हैं
हुकूमत में रद्दोबदल चाहते हैं
मिटा देंगे जुल्मों की हस्ती को या तो,
या हम खुद जहां से मिटा चाहते हैं'

यह पंक्तियां स्वाधीनता पूर्व अन्याय-अत्याचार, शोषण तथा पीड़ा के प्रतिक्रिया स्वरूप स्वरूप उभर कर आई है। हम इस बात से परिचित है कि जहाँ एक ओर सुप्त भोले भाइयों को जगाने में यहां के कवियों एवं गीतकारों ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका जागरण स्वर सुनकर मंत्र मुग्ध सी जनता स्वयं उनके स्वर में स्वर मिलाने लगी थी। विदेशी

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

शासको की 'फूट डालो और राज करो' की नीति से तथा उनके भेदभाव से हिंदुस्तान की जनता परिचित हो रही थी। शासक किसान-मजदूरों पर अत्याचार करते थे। जोंक की तरह किसान, मजदूर, श्रमिक तथा दीन-हीन सभी को चूस चूस कर खाए जा रहे थे। आजादी के आंदोलन में महात्मा गांधी जी का आना संपूर्ण राष्ट्र के आम पीड़ितों और दुखियों के लिए एक विलक्षण सुखद अवसर था। यही कारण है कि महात्मा गांधी जी के आवाहन पर ही हिंदुस्तान के किसान, मजदूर तथा श्रमिक अपने अधिकारों के लिए तथा आत्मोत्थान के लिए संकल्प कर स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय हो रहे थे। तत्कालीन राजनीतिक परिवेश एवं परिदृश्य एवं विदेशी शासकों के शोषण का शिकार हो रहे भारतवर्ष के साथ आमजन, सेठ-साहूकार, गिरस, राजा, जागीरदार कोई भी कवियों की दूरदृष्टि एवं पैनी नजर से कैसे बच सकता है? यदि कवि इन पहलुओं के प्रति सचेत नहीं है तो कवियों की संवेदनशीलता तथा सामाजिक प्रतिबद्धता पर प्रश्न चिन्ह लगता ? लेकिन हिंदी कवि एवं गीतकारों ने अपनी व्यापक संवेदना का परिचय दिया है इस बात को नकारा नहीं जा सकता।

विदेशी जुल्म एवं प्रतिरोध की भावना : सन 1941 के 'प्रजासेवक' समाचार पत्र में प्रकाशित जय नारायण व्यास का 'याद रहेगी' शीर्षक गीत संग्रह का पहला गीत है। गीत के माध्यम से कवि जयनारायण व्यास कहते हैं विदेशी शासको के जुल्मों से हिंदुस्तानवासी त्रस्त हुए थे, आम जन की आवाज शोषण की चक्की के पाटों के बीच दबी हुई थी। जिसे कवि ने बखूबी प्रस्तुत किया है- "बाकी मत रख खूब सता ले,/ खूब दिखा दे अपना पशुबल, /
निर्बल का बल देख रहा है, तेरे सब कुकृत्य को प्रतिपल।।
... तोड़ हड्डियां, चीर कलेजा, बहा रुधिर,/ सब जी की कर ले।।
नहीं रहेगी सत्ता तेरी, बस्ती तो आबाद रहेगी।/ जालिम!
तेरे सब जुल्मों की, उसमें कायम याद रहेगी!!"[2]

कवि जयनारायण व्यास इन पंक्तियों के माध्यम से विदेशी शासको के बहुआयामी शोषण के शिकार आम जन पर हो रहे असीम आत्यचारों को उद्घाटित करते हैं। कवि आम जन की गहरी संवेदना का परिचय देता है कि वह शासन से कहता है चाहे जितने भी अन्याय-अत्याचार, जुल्म किया जाए, तुम्हारी सत्ता एक न एक दिन समाप्त होगी। निर्बलों की कमजोरी को तुमने जान लिया है। लेकिन यहां जो बस्ती है वह आबाद रहेगी। तुम यह मत भूलना, तुमने जो अत्याचार एवं जुल्म किए हैं उसे भारतवासी कभी भूलेंगे नहीं। कवि दूसरी ओर आम समाज कवि चेतना जगाता है। कवि को विश्वास है कि यह ज्यादा समय तक नहीं चलेगा एक न एक दिन जुल्मी शासकों की सत्ता समाप्त होगी।

राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक :विजय सिंह पथिक द्वारा लिखित 'पथिक संग्रह' का 'झंडा न नीचे झुकाना' गीत पाठकों को सोचने के लिए बाध्य करते हुए उन्हें राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कर देता है। यह गीत अपने समय की दस्तक तो रहा ही है लेकिन दूसरी ओर यह गीत एक कालजयी गीत के रूप में राष्ट्र के प्रति युवाओं में चेतना जगाने के लिए सदियों प्रसांगिक बना रहेगा इसमें संदेह नहीं है। उनमें झंडे के प्रति आदर-भाव एवं यह झंडा भारतवर्ष के आत्म सम्मान का प्रतीक है, इस बात का एहसास दिलाता है। राष्ट्रीय भावना उजागर करते हुए कवि कहता है, चाहे जो भी हो, किसी भी मुसीबत का सामना क्यों न करना पड़े, यह झंडा किसी भी हालत में नीचे नहीं झुकना चाहिए। क्योंकि यह हमारे आजाद होने की निशानी है। झंडे के प्रति सम्मान भावना

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

को उद्घाटित करते हुए कवि कहता है- "है यह आजादपन की निशानी, इसके पीछे है लाखों की कहानी।

जिंदादिल ही है इसको उठातें, मर्द ही शीश इस पर चढ़ाते, तुम भी सब कुछ इसी पर चढ़ाना, पर यह झंडा न नीचे झुकाना।"[3]

दृष्टव्य पंक्तियां आज भी पाठकों के दिलों में रोंगटे खड़ा कर देती है। आजादपन की निशानी या आजादी की यह कहानी सहज नहीं है। क्योंकि इसके लिए कई आंदोलनकारियों ने अपना योगदान दिया है। दूसरी ओर कवि कहता है इस पर शीश चढ़ाने वाले भी मर्द ही है, और भारतवर्ष के युवाओं को चाहिए कि चाहे अपने प्राणों को भी त्यागना क्यों न पड़े, लेकिन हमारे राष्ट्र का आत्म सम्मान यह झंडा नीचे नहीं झुकना चाहिए। कवि इस प्रकार का अनुरोध एवं आग्रह कई भारतवासियों से करता है। साथ-साथ इस गीत के माध्यम से कवि जलियांवाला या डायर के इतिहास का भी जिक्र करता है। विदेशी शासको के जुल्मों से भी कभी अवगत कराता है। शासकों से अनगिनत जुल्म होते थे। यहां तक कि पेट के बल पर चलाना, मां- बहनों को रुलाना, कोसों बच्चों को पैदल चलाया तथा किसी को भरपेट खाना नहीं देना। कवि कहता है यह स्वाधीनता की बड़ी व्यापक कहानी है, जिसमें कई कुर्बानियां बीत गई है। तत्पश्चात स्वाधीनता की बनी यह कहानी है। हमारा दायित्व है कि राष्ट्र की अस्मिता एवं राष्ट्र के प्रति राष्ट्रीय भावना को बनाए रखना और उसे नई पीढ़ी में पर्तिवार्तित देखना है। जिससे आनेवाली पीढियां राष्ट्र का सम्मान, अपने झंडे के प्रति हर समय आदर प्रकट करेंगी।

आपसी सौहार्द एवं राष्ट्र-पताका की अमरता : कवि सुधींद्र की 'प्रजासेवक' समाचार पत्र में जनवरी, 1941 में प्रकाशित 'हो- अमर हमारी प्यारी राष्ट्र-पताका' कविता के माध्यम से कवि राष्ट्र की राष्ट्र-पताका अर्थात झंडे का सम्मान करना चाहता है। राष्ट्र की पहचान बनी यह पताका मानवता को उजागर करती है। कवि भाईचारे की भावना को बढ़ावा देते हुए कहता है-

"हिंदू -मुस्लिम या बौद्ध, जैन, ईसाई, धरती है माता और सभी है भाई।

है प्रेम जहां रे! कैसी वहां लड़ाई? हम सबकी इसमें प्रीति पवित्र समाई।

यह झंडा सबकी समता का, रक्षा का, हो अमर हमारी प्यारी राष्ट्र-पताका।"[4]

सन 1941 में प्रजासेवक में प्रकाशित महालचंद बोथरा की रचना 'आव्हान' के माध्यम से आजादी के दीवानों को ललकारती है। समर क्षेत्र में चलने के लिए कवि आग्रह करता है। कवि का कहना है कि यह स्वर्णबेला का अवसर हर किसी हिंदुस्तानवासी को अपने आपसी मन-मुटाव को तिलांजलि देकर प्रेम, संगठन मंत्र फूंककर सिर को कफन बांधकर तैयार होना है। आपसी सौहार्द के बारे में कवि कहता है –

"हिंदू, मुसलिम, हरिजन-ब्राम्हण, भाई है समझाओं,
एक देह और एक रक्त, यह नकली भेद मिटाओ।।"[5]

स्पष्ट है कि स्वाधीनता चेता कवि आम जन के प्रतिनिधि बनकर आम जन को संगठित करते थे। उन्हें विश्वास था कि पूंजीपति, सत्ताधीशों की हिटलरशाही से आम जन जीवन प्रभावित हुआ है। कवि सोये हुए समाज को आव्हान करता है कि हिंदू हों, या मुसलमान या कि हरिजन-ब्राम्हण हमें आपसी भेदभाव को मिटाना होगा। क्योंकि हिंदू हों या मुसलमान या किसी भी धर्म का अनुयायी हर किसी का खून लाल ही है। अर्थात हमने आज तक नकली भेद को ओढ़ लिया है, जिसे मिटाने की आवश्यकता।

जनचेतना का परिणाम : शिवराज जोशी 'सुमनेश' ने सन 1941 के 'प्रजा सेवक' में छपी कविता 'हमने सीना

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

तान लिया है' में शासकों की कूटनीति का परिचय दिया है। उनका मानना है कि विदेशी राष्ट्र के जमींदारों का साथ लेकर आम जन का बहुआयामी शोषण कर रहे थे। आमजन की आवाज दबी कुचली जा रही थी। कवि कहता है कि हमने चुपचाप गोलियों को चलते हुए अपनी आख्नों से देखा है। किंतु आज हममें जागृति फैली हुई है। यह जागृति की ज्वाला हमारे समाज में फैलती जाएगी। कवि शासको के मनमानी को उजागर करते हुए कहता है-

"तुमने पी-पी खून हमारा, घर में घी के दीप जलाये,
भिखमंगों का कौर छीनकर, तुमने अपने थाल सजाये।
तुम महलों में रहकर, झोंपड़ियों को आज कुचलने आये,
तुम हंसने में लीन, हमारे रोने को भी समझ न पाए।।"[6] स्पष्ट है कि यह पंक्तियां शोषितों की दर्दनाक पीड़ा को उजागर करती है। महलों में रह रहे जमींदार-सेठ साहूकारों ने गरीबों को अपने पैरों तले दबोच लिया। एक ओर विदेशी शासकों से गरीबों का बहुआयामी शोषण हो रहा था। लेकिन दूसरी ओर शोषक शोषितों की व्यथा देखकर खिल्ली उड़ाते थे।

नारी चेतना का स्वर : सुश्री कृष्णा कुमारी माथुर लिखित 'ओ मेरी नारी, जाग! जाग!!' रचना 1941 में प्रजा सेवक में छपी थी। जहां एक और स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों ने राष्ट्र के युवाओं को चेतित एवं प्रोत्साहित किया, उनमें चेतना जगाई, वहां दूसरी ओर यह कवि नई चेतना के प्रहरी भी दिखाई देते हैं। वह सोई हुई नारी को अपने तथा राष्ट्र के आत्म सम्मान के लिए आगे आने के लिए वे आवाहन करते हैं। कवयित्री कहती है –

"तू प्रलय बन आ री! तू नवल चेतना बन आ री!
उठ, रात गई, अब नींद त्याग, ओ मेरी नारी, जाग! जाग! !"[7]

दृष्टव्य पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि कवयित्री सुश्री कृष्णाकुमारी माथुर नारी प्रतिनिधि के रूप में अपनी आवाज को आम नारी तक पहुंचाना चाहती है। वह पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की अपील करती है। स्त्रियों में चेतना जगाकर स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय होने का आवाहन करती है।

स्वाधीनता आंदोलन की नींव बनी रचनाएँ : दिसंबर 1937 के 'नवज्योति' समाचार पत्र में प्रकाशित श्रीलाल मिश्र की 'बंदी' शीर्षक रचना भी अपने आप में स्वाधीनता आंदोलन की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है इसमें संदेह नहीं है। हम इस बात से परिचित है कि स्वाधीनता आंदोलन के लिए तथा देश की आजादी के लिए हमारे देश के युवा नौजवानों ने तथा वीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी है। लेकिन वीरों के बलिदान तथा उनके जेल में बंदी रहने पर कवि उन्हें आश्वस्त करना चाहते हैं कि तुम्हारा बलिदान युवाओं की प्रेरणा होगा, तुम्हारा जेल में बंद होना दूसरों के लिए प्रेरणा होगा, देश सेवा के लिए इससे बड़ा उपहार और क्या हो सकता है? इसलिए कवि कहता है- वीर तुम हिम्मत मत हारना क्योंकि तुम्हारे हिम्मत हारने पर आजादी पर प्रश्न चिन्ह बना रहेगा। इसलिए तुम्हें हिम्मत के साथ खड़ा होने पर तुम दूसरों को प्रोत्साहित करोगे। तुम आदर्श कहलाओगे। कवि जेल में बंद वीरों को आवाहन करते हुए नव युवाओं में राष्ट्र के प्रति विश्वास एवं आस्था की भावना जगाता है।

भारत वीणा, समाज सुधार भाग 2 में संवत 1992 में प्रकाशित हंसराज जैन की भारत को नहीं लुटने दूंगा' रचना अपने समय की दस्तक कहीं जा सकती है। कवि आमजन को आश्वस्त करना चाहता है कि गैरों को अब भारत में कोई स्थान नहीं है। भारत में रहकर भारत का कोई शत्रु नहीं होगा। ना हम उन्हें भारत में टिकने देंगे। तत्कालीन समाज को अपने दुश्मन का एहसास हुआ था इसलिए आम जन समझ रहा था चंद पैसों

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XIII, Issues – I (Special Issues -II) Jan – Feb 2024

OPEN ACCESS Original Research Article

के लिए हम मंदिर-मस्जिदों को नष्ट नहीं करेंगे। कवि कहता है-

"तुम योद्धा नहीं लुटेरे हो, भारत को लूटने आए हो,
पर याद रखो मैं जीते जी, भारत को नहीं लुटने दूंगा।"[8] कवि की इन पंक्तियों में वह चेतना प्रस्फुटित हुई है कि इसमें मैं अर्थात स्वयं की भावना है यदि इस राष्ट्र का हर 'मैं' इस प्रकार आवाहन को स्वीकारता है, तो हर कोई इस भारतवर्ष के लुटेरों के खिलाफ होगा।

जीवन के प्रति आस्थावान तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण के भाव को उद्घाटित करती पूर्ण चंद्र त्रिपाठी की रचना 'व्यथित हृदय की अभिलाषा' में कवि अंग्रेजों की दस्तानों तथा गुलामी से परेशान आमजन की ओर देखते हुए आमजन को जीवन के प्रति आस्थावान बनाने की बात करता है। वह कहता है शोषण की चक्की के पाटों में पीसते समाज में उत्साह नहीं है, लेकिन कवि उन्हें आश्वस्त करता है, जैसे ही रात बीत जाती है, सुबह हो ही जाती है। इसलिए उदास नहीं होना है। जिस प्रकार कभी रजनी अर्थात रात्रि का भी दिन होता है ठीक उसी प्रकार पतीतों का भी उत्थान होता ही है। तो क्या हमारे जीवन के भी कभी भाग नहीं बन पाएंगे इसलिए कभी कहता है- "साहस मेरे! इतना बढ़ जा, भारत का उत्थान करूं मैं।/ मरने का फिर शोक नहीं हो, पीड़ा का अवतार धरू मैं।।"[9] कवि जीवन की सार्थकता को व्यापक धरातल पर उजागर करता है। वह सोचता है कि यह जीवन आज मिला हुआ है, कब मुरझा जायेगा? मेरे जीवन की सार्थकता राष्ट्र के प्रति समर्पित होने में निहित है। यदि एक बार मां के बंधन को तोड़कर चलू तो मां की इच्छा अधूरी ना रह जाए। इसलिए मुझमें असीम साहस को बढ़ाने की कवि अपील करता है, जिससे वह भारत के उत्थान में अपना सहयोग दे सकें।

निष्कर्ष : उक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'स्वाधीनता के गीत' एवं रचनाकार आम जन के जीवन को संगीत में परिवर्तित करने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं। यह वे गीत है जिन गीतों ने आजादी के आन्दोलन की बुनियाद बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विचारणीय है कि विवेचित कवि मात्र कलम के जादूगर नहीं थे अपितु वे विदेशी शासकों के प्रति चलाये गये असहयोग आन्दोलन में सक्रियता भी दिखाते है। साथ ही विवेचित कवियों ने जहाँ विदेशी शासको के शोषण, जुल्म, अन्याय, अत्याचार से त्रस्त राष्ट्र का वर्णन किया है, वहाँ आम-जन में राष्ट्रीय भाव जागते हुए आजादी की चिनगारी का अविभाज्य बनने के लिए भी आग्रह किया है। युवाओं में राष्ट्रीयता भावना को बढ़ावा देने तथा परिस्थितियों से अवगत कराते हुए नारी चेतना के प्रति भी कवि प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं।

संदर्भ संकेत :

1. डॉ. मंजुलता तिवारी-भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों का योगदान,1998, संपादकीय से उद्धृत
2. जे. के जैन – स्वाधीनता के गीत, 1987, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, पृष्ठ-1
3. वही, पृष्ठ-2
4. वही, पृष्ठ- 16
5. वही, पृष्ठ- 45
6. वही, पृष्ठ-17
7. वही, पृष्ठ-12
8. वही, पृष्ठ-15
9. वही, पृष्ठ-18

Cite This Article:

डॉ. नवले भ. एन. ***(2024).*** *'स्वाधीनता के गीत' : समय की दस्तक*, In Electronic International Interdisciplinary Research Journal: Vol. XIII (Number I, pp. 19–24. **EIIRJ**. https://doi.org/10.5281/zenodo.10651972